कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 62–63

मूँग की उन्नत खेती

डॉ महेंद्र प्रताप सिंह, डॉ रमेश पाल, डॉ सुनील, इंजी. सत्यार्थम, कमल सिंह एवं व्योमेंद्र सिंह

सहायक प्राध्यापक

कृषि विज्ञान और इंजीनियरिंग स्कूल

आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश), भारत।

Email Id: mahendraarya7@gmail.com

भारत वर्ष में मूँग की फसल खरीफ तथा ग्रीष्मकालीन ऋतुओं में उगाई जाती है। मूँग का प्रयोग मुख्यतः दाल के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग हलवा, बड़ी, पापड़, डोसा, इडली आदि रूपों में भी किया जाता है। मूँग के पौधों तथा सूखी फलियों एवं भूसा का प्रयोग पशुओं को खिलने के लिए चारे के रूप में किया जाता है इसका चारा बहुत ही पौष्टिक होता है।

भूमि एवं भूमि की तैयारीः

दोमट तथा बलुई दोमट भूमियाँ जिनमें जल निकास के पर्याप्त साधन हों, उपयुक्त होती है। वर्षा के पश्चात् खेत की पहली एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के पश्चात् दो–तीन जुताइयाँ देशी हल से करके खेत अच्छी प्रकार से तैयार क्र लेना चाहिए। मिट्टी को भुरभुरा बनाने के लिए प्रत्येक जुताइयों के पश्चात् पता लगा देना चाहिए।

उन्नत प्रजातियांः

पन्त मूँग –1, पन्त मूँग– 2, पन्त मूँग– 3, पन्त मूँग– 4, पन्त मूँग– 5, पन्त मूँग– 6, नरेंद्र मूँग– 1, नरेंद्र मूँग– 2, पी.डी.एम.– 54, पी.डी.एम.– 11, सम्राट, मालवीय ज्योति, मालवीय जनचेतना, मालवीय जाग्रति, आशा, मेहा, आई.पी.एम.– 2–3, आई.पी.एम.– 2–14, वर्षा, एम.यू.एम.– 2

बीज की मात्रा तथा अन्तरणः

बीजदर –

- 12–15 किग्रा प्रति हैक्टेअर (खरीफ ऋतु)
- 20 किग्रा प्रति हैक्टेअर (रबी एवं जायद ऋतु)

अन्तरण–

- 45 X 10 (खरीफ ऋतु)
- 30 X 10 (रबी एवं जायद ऋतु)

बीजोपचारः

2.0 ग्राम थीरम तथा 1.0 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति किलो बीज की दर से बीजों को शोधित करने के पश्चात् राइजोबियम कल्चर के एक पैकेट से 10.0 किग्रा बीजों का उपचार करना चाहिए।

बोने का समय तथा विधिः

खरीफ ऋतु में मूँग की बुआई का अगस्त का दूसरा सप्ताह समय उपयुक्त है। ग्रीष्मकालीन मूँग की बुआई का उपयुक्त समय मार्च के अन्तिम सप्ताह से अप्रैल का प्रथम सप्ताह है।

मूँग के बीजो की बुआई सदैव हल के पीछे कूँडों में की जानी चाहिए।

उर्वरक प्रबन्धः

15–20 किग्रा नत्रजन, 40–50 किग्रा फास्फोरस, 40 किग्रा पोटाश तथा 20 किग्रा गन्धक प्रति हैक्टेअर की दर से बुआई के पूर्व खेत में फैलाकर अच्छी प्रकार से मिला देनी चाहिए।

सिंचाईः

खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली मूँग की फसल में सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु सूखा पड़ने की दशा में एक सिंचाई करने से पौधों का विकास अच्छा होने से उपज में वृद्धि हो जाती है।

गीष्म कालीन मूँग की खेती केवल सिंचित दशाओं में की जाती है अतः 10–12 दिन के अंतराल पर फसल को कुल 3–4 सिंचाइयों की आवश्यकता होने से अच्छी उपज प्राप्त होती है।

खरपतवार नियंत्रणः

मूँग की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए खेत सदैव खरपतवार रहित होना चाहिए। फसल के बोने के पश्चात् जमाव के पूर्व पेन्डीमिथालिन 1.25 किग्रा सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेअर की दर से तथा बोने के पूर्व फ्लूक्लोरेलिन (बासालिन) 1.0 किग्रा सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेअर की दर से 800–1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने से समस्त प्रकार के चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार नष्ट हो जाते है।

प्रमुख कीट एवं उनका नियंत्रणः

मूँग की फसल में फली बेधक कीट तथा फली का रस चूसने वाले कीट का प्रकोप सबसे अधिक होता है। इन कीटो के नियंत्रण के लिए इन्डोसल्फान (35 ईसी) 1.25 लीटर, मोनोक्रोटोफास (36 ईसी) 800 मिली, डाईमिथोएट (30 ईसी) 800 मिली तथा मैलाथियान (50 ईसी) 800 मिली प्रति हैक्टेअर की दर से एक–दो छिड़काव करने चाहिए।

प्रमुख बीमारियाँ एवं उनका नियंत्रणः

मूँग की फसल में मुख्यतः पीला चित्तवर्ण रोग तथा पत्तियों का धब्बा बीमारियों का प्रकोप होता है। पीला चित्तवर्ण रोग काक प्रकोप मुख्यतः सफेद मक्खी द्वारा होता है। अतः इस कीट के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट (30 ईसी) 1 लीटर तथा मिथाइल–ओ–डिमेटान (25 ईसी) 1 लीटर प्रति हैक्टेअर की दर से प्रयोग करना चाहिए।

कापर आक्सीक्लोराइड 3 किग्रा प्रति हैक्टेअर की दर से 10 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करना चाहिए। थायोफिनेट मिथाइल 500 ग्राम प्रति हैक्टेअर की दर से एक छिड़काव करने से इन रोगों का नियंत्रण हो जाता है। इसके अतिरिक्त रोगग्रसित पौधों को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

उपरोक्त उन्नत कृष्य पद्वतियाँ अपनाने से मूँग की 12–15 कुन्तल प्रति हैक्टेअर उपज प्राप्त की जा सकती है ।